IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान

लेखक परिचय:-

राहुल कुमार भारती

शोध छात्र

बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

रितेश कुमार

शोध छात्र

ISDC, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

शोध-सार :- पत्रकारिता किसी भी काल या देश में जागरूकता का सबसे सशक्त माध्यम होता हैं, औपनिवेशिक भारत में भी पत्रकारिता का विशेष महत्व था, पत्रकरिता ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ लोगों को जागरूक करने तथा उन्हें ब्रिटिश सरकार के खिलाफ संघर्ष करने के लिए, तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ब्रिटिश सरकार लगातार राष्ट्रवादी पत्रकारिता को दमन करने का प्रयास करती रही, परन्तु भारतीय स्वाधीनता प्रेमी पत्रकारों ने तमाम ब्रिटिश यातनाओं के बावजूद पत्रकारिता करते रहें, जिसके लिए उन्हें जेल आदि की सजा दी गई। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से स्वतन्त्रता आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं को समझना हैं, इसके साथ हिंदी पत्रकारिता का विकास तथा उसके विविध आयाम एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं एवं पत्रकारों के योगदान की विवेचना करना हैं।

मुख्य-शब्दावलियाँ:- पत्रकारिता, स्वतन्त्रता, आन्दोलन, राष्ट्रवाद, पत्रिकाएँ, जागरण।

हिंदी पत्रकारिता की भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका थी। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं ने जन चेतना के निर्माण तथा अपनी बातों को देश के आम लोगों तक पहुंचाने के लिए पत्रिकाओं का प्रयोग किया। पत्रिकायें तत्कालीन समय में संचार का प्रभावशाली माध्यम थी जिसके कारण ब्रिटिश सरकार सदैव उससे भयभीत रहती थी यही कारण है कि ब्रिटिश सरकार तत्कालीन समय में अनेक पत्र-पत्रिकाओं को प्रतिबंधित करती रहती थी, जिससे जन-जागरूकता को रोका जा सके। उदार वादी तथा क्रांतिकारी आन्दोलनकारी, दोनों के लिए ही पत्रिकाएं संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम थी , जिससे अपनी बात, कार्यप्रणाली लोगों तक पहुंचाई जा सके और लोगों का समर्थन प्राप्त किया जा सके । अहिंसा तथा गांधीवादी सिद्धांतों को मानने वालों ने अनेक पत्रिकाओं का संपादन किया ठीक उसी प्रकार अनेक पत्रिकाये क्रांतिकारी विचारों का समर्थन करती थी। हिंदी में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों ने पूरे भारत वर्ष को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया।

हिंदी में प्रकाशित होने वाला पहला समाचार पत्र "उदंत मार्तंड था। जिसका प्रारंभ कोलकाता के कोलूटोला मोहल्ले से पंडित युगल किशोर शुक्ल के सम्पादन में हुआ था।

भारत में मुद्रण कला यानी प्रेस की स्थापना पुर्तगलियों द्वारा किया गया। डॉ अवधेश कुमार का कहना है कि 'भारत में सन् 1566 में पुर्तगालियों के माध्यम से प्रेस का प्रयोग आरंभ किया गया, जिसे सर्वप्रथम गोवा में स्थापित किया गया। सन 1557 में भारत में सर्वप्रथम 'ट्राक त्रिनिक्रिटानों नामक पुस्तक प्रकाशित की गई।[1] लेकिन भारत में पत्रकारिता विकसित करने का श्रेय अंग्रेजों को जाता है। अंग्रेजों ने बॉम्बे (1672), मद्रास (1772) और कलकता (1779) में प्रेस की स्थापना की। पत्रकारिता के क्षेत्र में सर्वप्रथम जेम्स आगस्टस हिक्की ने 29 जनवरी 1780 में 'हिक्कीज़ गजट' अथवा बंगाल गजट प्रकाशित किया जो 'कलकत्ता जर्नल एडवर्टाइजर' के नाम से भी जाना जाता है। यह अंग्रेजी भाषा में एक साप्ताहिक पत्र था। ओपी शर्मा भारतीय पत्रकारिता के विकास के इतिहास पर लिखते हैं कि 18 वीं सदी के अंतिम चरण में इस देश के तीन प्रांता बंगाल मद्रास और बम्बई में अंग्रेजी भाषा में साप्ताहिक 'और मासिक पत्र निकलने लगे थे। अब तक दैनिकों का युग नहीं आया था और ना ही भारतीय भाषाओं में कोई पत्र प्रकाशित होता था।[2]

1857 में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता की बर्बर तानाशाही के प्रति नई चेतना विकसित की। भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी क्षेत्रों में सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक सुधारों को प्रोत्साहन देने की प्रेरणा मिली। 1868 में उन्होंने काशी से 'वचन सुध" के प्रकाशन के माध्यम से हिंदी लेखेकों को प्रेरित किया। इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने जन चेतना लाने का कार्य किया और स्त्री पुरुष समानता का समर्थन किया। उन्होंने भारत के स्वशासन और संपूर्ण संप्रभुता का स्वप्न देखा।[3]

हिंदी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में अहम योगदान दिया। स्वतंत्रता आंदोलन को दर्शन और दिशा देने का काम पत्रकारिता ने ही किया, उस समय पत्रकारिता व्यवसाय नही, वृति थी। इसलिए हर प्रकार की कीमत चुकाकर पत्रकारों ने आजादी की लड़ाई जारी रखी, पत्रकार फांसी पर चढ़े, काला पानी की सजा भुगती, जेल गए, कोड़े खाएं, अनेक प्रकार की यातनाएं सही । तब पत्रकारिता प्रखर देशभक्ति का नाम था। पत्र और पत्रकारों के लिए एक ही दुश्मन था-अंग्रेज एक ही देश था-हिंदुस्तान, एक ही लक्ष्य था आजादी एक ही नेता थे पहले तिलक बाद में गाँधी।"[4]

1857 की क्रांति के समय मौलाना मोहम्मद बाकर को मौत की सजा दी गयी, क्योंकि उन्होंने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के सिपाहियों के प्रशंसा एवं समर्थन में अपने साप्ताहिक पत्रिका में लिखा था।[5]

पूर्वी उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर से माधव प्रसाद धवन ने 1888 में साप्ताहिक पत्र खिचड़ी समाचार का प्रकाशन किया, इसका आदर्श वाक्य था-

अन्याय भूख को हारनहार

दे न्याय स्वाद आनंद डंकार

स्वातंत्र्य प्रजा को बल अधार

देवै यह खिचड़ी समाचार

खिचड़ी समाचार राष्ट्रीय तथा हिंदू-मुस्लिम की पृथक रणनीति का घोर विरोधी था। विचारों की उग्रता के कारण यह पत्र ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन बना। संपादक धवन ने जेल की भी हवा खाई। अधिक जमानत मांगे जाने के कारण इस पत्र को बंद कर देना पड़ा। 1888 में गोरखपुर के मझगावा बरही से विदया धर्म दीपिका का प्रकाशन किया गया। इसके संपादक चंद्रशेखर धर थे। इस पत्र में राजनीतिक चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। देवरिया जिले के मझौली राज के खडगबहादुर मल्ल की 'क्षत्रिय' पत्रिका ने 1942 के अंक में जागरण का जो यंत्र दिया, वह आज भी याद किया जाता है। अंबिका दत व्यास दवारा लिखित मछर नामक लेख में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जति के पलन का चित्र प्रस्तुत किया गया। इस लेख में ब्राह्मणों को अपने कार्य से विचलित होने पर जहाँ धिक्कारा गया है. वहीं क्षत्रियों को ललकारते हुए कहा गया है कि 'क्षत्रिय गण जीते रहो उचित करते रहो। हमी में तुमसे लोगों को पराधीन किया है। बस हमारे ही ऊपर वीरता के हाथ साफ करो और स्वतंत्र हो जाओ, क्या बात है अम्बरीष, रघु, दिलीप आदि महात्माओं के कुल में न जन्मे हो बस ऐसे ही काम करो जिसमें बिना कहे कुल परिचय मिले। क्षत्रिय पत्रिका का यह उदघोष राष्ट्रीय चेतना जगाने में मददगार साबित हुआ।[6]

1901 में प्रकाशित होने वाले पत्रों में चंद्र धर शर्मा गुलेरी का 'समालोचक' महत्वपूर्ण है। इस पत्र का दृष्टिकोण आलोचनात्मक था और इसी दृष्टिकोण के कारण यह पत्र चर्चित भी रहा। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने स्वदेशी के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी पत्रिका "सरस्वती" में लिखा

"अपना बोया आप ही खा वे अपना कपड़ा आप बनावें"[7]

ठीक उसी प्रकार उन्होंने 1906 में महिलाओं को आभूषणों के प्रति जागरूक करने के लिए लिखा-

"हे भामिनियो, कुलकामिनियों, ये चूड़ियाँ है परदेसियों

कलंक भारी पहनो इन्हें जो छोड़ो, जरा तो मन में लजाओ।[8]

1910 में गणेश शंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' का प्रकाशन किया। यह पत्र उग्र एवं क्रांतिकारी विचारधारा का पोषक था। उग्र नीतियों के समर्थक इस पत्र ने उत्साह एवं क्रांति के पोषण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन पत्रों का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना एवं भाषा नीति का प्रसार करना था। उग्र एवं क्रांतिकारी विचारधारा के पोषण पत्र स्वाधीनता के प्रसार के लिए प्रयास कर ही रहे थे, साथ ही साथ साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं ने अनेक लेख लिखकर जनता की सुप्त भावनाओं का दिशा-निर्देशन किया।

प्रेमचंद ने 1932 में 'जागरण' और 1936 में 'हंस' का प्रकाशन किया। 'हंस' का उद्देश्य समाज का आह्वान करना था। 'हंस' साहित्यिक पत्रिका थी जिसमें साहित्य की विविध विधाओं का प्रकाशन किया जाता था। महात्मा गांधी की अहिंसा को साहित्य के माध्यम से स्थापित करने वाले प्रेमचंद ने हंस में भी इसी आदर्श को स्वर दिया। स्वतंत्रता के प्रति महात्मा गांधी के निरंतर प्रयास को महसूस करते हुए 'हंस' ने लिखा भारत के कर्णधार महात्मा गांधी ने इस विचार की सृष्टि कर दी। अब वह बढ़ेगा, फूले फलेगा।... हमारा यह धर्म है कि उस दिन को जल्द से जल्द लाने के लिए तपस्या करते रहें। यही हंस का ध्येय होगा और इसी ध्येय के अनुकूल उसकी नीति होगी।[9]

गांधी की नीतियों का समर्थन, स्वराज्य स्थापना के लिए जागरण का प्रयास और साहित्यिक विधाओं का विकास ही 'हंस' का लक्ष्य था। प्रेमचंद के पश्चात् शिवरानी देवी, विष्णुराव पराड़कर, जैनेन्द्र, शिवदान सिंह चौहान, अमृतराय ने इस पत्रिका का संपादन किया। इसके पश्चात कुछ समय तक 'हंस' का प्रकाशन एक नए रूप में और नए आदर्श-यथार्थ को समन्वित करके नए ज्वलंत प्रश्नों को उभारते हुए राजेन्द्र यादव द्वारा किया गया। अब इसका प्रमुख स्वर -किसान और स्त्री एवं दलित पीड़ा का है। इन तीनों वर्गों की सशक्त उपस्थिति इसमें देखी जा सकती है। शोषित वर्ग की आवाज 'हंस' में प्रमुखता से स्थान प्राप्त कर रही है।

पत्रकारिता तत्कालीन समय में अत्यंत जोखिम भरा कार्य था। पत्रकारों को कठोर यातनाएं तथा सजा दी गई जिनकी लंबी फेहरिस्त है इसकी पुष्टि 'स्वराज्य' के संपादक के लिए छपे विज्ञापन से हो जाती है "चाहिए स्वराज्य के लिए एक संपादक। वेतन दो सूखी रोटियां, एक गिलास ठंडा पानी और प्रत्येक संपादकीय के लिए दस साल की जेल. 1857 की क्रांति के समय मौलाना मोहम्मद बाकर को मौत की सजा दी गई क्योंकि उन्होंने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के सिपाहियों के प्रशंसा एवं समर्थन में अपने साप्ताहिक पत्रिका में लिखा था। कर्मवीर के संपादकीय लेखन में माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा आजादी कितना मीठा शब्द है, पर यह शब्द अपने आप में मीठा नहीं, इसमें मिठास लाते हैं कुर्बानी, इसमें मिठास लाता है बलिदान पर यह बलिदान औरो का ना हो, उनका हो जो आजादी चाहते हैं। कर्मवीर ने स्वतंत्रता के समय ओज एवं जोशपूर्ण शीर्षक " राष्ट्रीय ज्वाला जगाईये" के साथ देश के युवाओं के हृदय में देश भक्ति का भाव भर दिया। माखनलाल चतुर्वेदी बारह बार जेल गए तथा 63 बार इनकी तलाशी हुई। इसी प्रकार अनेक पत्रिकाओं के संपादकों की यातनाएं दी गई जिससे उनके मनोबल को तोड़ा जा सके परंतु ब्रिटिश सरकार इसमें कामयाब नहीं हुई।[10]

हमारे देश के स्वाधीनता संघर्ष में पत्र-पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है। आजादी के आंदोलन में भाग ले रहा हर आमो-खास कलम की ताकत से वाकिफ था। राजा राम मोहन राय, महात्मा गाँधी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, बाल गंगाधर तिलक, पंडित मदन मोहन मालवीय, डॉ भीमराव अंबेडकर, यशपाल जैसे आला दर्जे के नेता सीधे तौर पर पत्रिकाओं से जुड़े हुए थे और नियमित लिख रहे थे। इसका असर देश के दूर सुदूर गांव में रहने वाले देशवासियों पर पड़ रहा था। अंग्रेजी सरकार को इस बात का एहसास पहले से ही था लिहाजा उसने शुरू से ही प्रेस के दमन की नीति अपनाई।

भारतीय पत्रकारिता की स्वाधीनता को बाधित करने वाला पहला प्रेस अधिनियम गवर्नर जनरल वेलेजली के शासनकाल में 1799 को ही सामने आ गया था। भारतीय पत्रकारिता के जनक जेम्स आगस्टस हिक्की के समाचार पत्र 'हिक्की गजट' को विद्रोह के चलते सर्वप्रथम प्रतिबंध का सामना करना पड़ा। हिक्की को एक साल की जेल और 2000 का जुर्माना लगाया गया। कालांतर में 1857 में गैंगिक एक्ट, 1878 में वर्नाकुलर प्रेस एक्ट, 1908 में न्यूजपेपर्स एक्ट (इनसाइट अफेसेज), 1910 में इंडियन प्रेस एक्ट, 1930 में इंडियन प्रेस ऑर्डिनेस, 1931 में दी इंडियन प्रेस एक्ट (इमरजेंसी पावर्स) जैसे- दमनकारी कानून अंग्रेजी सरकार द्वारा की स्वतंत्रता को बाधित करने के उद्देश्य से लागू किए गए। अंग्रेजी सरकार इन काले कानूनों का सहारा लेकर किसी भी पत्र-पत्रिकाओं पर चाहे जब प्रतिबंध, जुर्माना लगा देती थी। आपत्तिजनक लेख वाले पत्र-पत्रिकाओं को जब्त कर लिया जाता था। लेखक संपादकों को कारावास भुगतना पड़ता था व पत्रों को दोबारा शुरू करने के लिए जमानत की भारी भरकम राशि जमा करनी पड़ती थी। परन्तु इन सब हथकंडों से अंग्रेजी सरकार पत्रकारिता को ना रोक सकी।"[11]

स्वतंत्रता आन्दोलन में पत्रकारिता ने अनेक प्रकार से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता आंदोलन की अपनी कुछ विशेषताएं थी। पहली बार सारा देश एक दुश्मन के खिलाफ खड़ा हुआ था, जो इसके पहले कभी नहीं हुआ था। दूसरे संघर्ष के और लड़ाई के जो हथियार उनके पास थे सत्याग्रह असहयोग अहिंसा, वह इसके पहले के राजनीतिक इतिहास में ना कभी प्रयुक्त किए थे, ना ही उनके बारे में कभी सोचा तक था। तीसरे, इस बार स्वतंत्रता के संघर्ष में बच्चे बूढ़े औरतें, किसान, मजदूर से लेकर मध्य वर्ग और बुद्धिजीवी तक मैदान में उतरे थे, जो इसके पहले के इतिहास में कभी नहीं हुआ था । चौथे, स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज में होने वाली सभी प्रकार की दकियानूसी के खिलाफ एक चौतरफा जंग जारी थी और इस जंग के साथ-साथ रचनात्मक कार्यों की एक लंबी फेहरिस्त गाँधीजी द्वारा जारी की गई थी, जिस पर हजारों कार्यकर्ता अमल कर रहे थे। संघर्ष और रचना का ऐसा दौर भी देश के इतिहास की अनोखी बात थी। हिंदी पत्रिकाएँ इस संदर्भ में तीन भूमिकाएं निभा रही थी, एक आजादी की जंग, दो समाज में सुधार तीन साहित्य का परिष्कार और इन तीनों स्थानों पर उसने जो किया उसे इतिहास कभी नहीं भूलेगा।[12]

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। पत्रकारिता ने अनेक प्रकार से स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहयोग प्रदान किया। पत्रिकाओं ने जन-चेतना तथा राष्ट्रीयता के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। महादेवी वर्मा ने कहा था- पत्रकारों के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाता है" इस वाक्य से हम स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका को समझ सकते हैं। पत्रिकायें जन-संचार का विश्वसनीय और प्रभावशाली माध्यम थी, जिसके द्वारा आसानी से अपनी बात एक साथ देश के आम जनमानस तक पहुंचाई जा सकती थी तथा उनका सहयोग प्राप्त किया जा सकता था। इस प्रकार पत्र-पत्रिकाओं ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। पत्रकारिता हर दौर में जन जागरुकता का कार्य करती हैं, सभी प्रकार के आंदोलनकारियों ने इसका प्रयोग अपनी बातों को जनता तक पहुंचाने के लिया किया। इसके द्वारा कभी विज्ञापनों के माध्यम से, कभी लेख के द्वारा अपनी बातों को लोगों तक पहुंचाया जाता रहा हैं। वर्तमान में भी यह एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं, जैसा की हर दौर में रही हैं। इसके महता को और अधिक रेखांकित करते हुऐ अकबर इलाहाबादी का यह मशहूर शेर कहा जा सकता है -

खींचो न कमानों को न तलवार निकालो

जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।

<u>सन्दर्भः-</u>

1. कुमार, डॉ अवधेश, हिन्दी साहित्य की पत्रकारिता, पृ. 33

2. शर्मा, ओ. पी., पत्रकारिता और उसके विभिन्न स्वरुप, पृ. 14

3. https://newsonair.gov.in/hindi/2022/05/30/hindi-journalism-day 9/05/2023 को देखा गया

4. गौतम, डॉ मीना, स्वाधीनता संग्राम और हिन्दी, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, 2008

5. Delhi Urdu Akhbar And It's Role During The 1857, Ministry of Culture, Govt of India

6. स्वतंत्रता संग्राम और पत्रकारिता - हिंदी विवेक (hindivivek.org), 9/05/2023 को देखा गया

7. सरस्वती पत्रिका, जुलाई 1903 अंक

8. सरस्वती पत्रिका, नवम्बर 1906 अंक

9. हिंदी साहित्य का विधागत इतिहास/पत्र-पत्रिकाओं का इतिहास - विकिपुस्तक (wikibooks.org)

01/05/2023 को देखा गया

10. जोशी, हेमंत कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका, समय साक्ष्य, 2017

11. हिंदी साहित्य का विधागत इतिहास/पत्र-पत्रिकाओं का इतिहास - विकिपुस्तक (wikibooks.org) ,20/04/2023 को देखा गया

12. गौतम, डॉ मीना, स्वाधीनता संग्राम और हिन्दी, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, 2008